

विश्व संगीत दिवस आज

खैरागढ़ स्थित इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय में किया जा रहा यह नवाचार

संगीत थैरेपी से देते हैं गर्भवतियों को तनाव से मुक्ति व पॉजिटिव एनर्जी

एक्सक्लूसिव

मोहनदास कुलदीप
patrika.com
खैरागढ़। खैरागढ़ स्थित इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय की पुस्तकालय में विशेष पहचान है। कला की भाषा के लिए दुनिया के अलग-अलग कोनों से कलासौधक यहां पहुंचते हैं। इस विश्वविद्यालय में गर्भवती महिलाओं को सकारात्मक महोत्सव देने और मानसिक तनाव से दूर रखने के लिए संगीत थैरेपी दी जाती है। विश्वविद्यालय में वर्ष 2018 से गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य, भावना पर ध्यान देते हुए संगीत

मैडिकल एक्सपर्ट की मौजूदगी में सुनाया जाता है भारतीय संगीत की एक से बढ़कर एक धुनों को



थैरेपी देना शुरू किया। चिकित्सकों का कहना है कि गर्भावस्था के दौरान महिलाएं तनाव में रहती हैं। संगीत सुनकर तनाव से मुक्त करवाते हैं। विश्वविद्यालय प्रबंधन की ओर से

शहर के अस्पताल के गर्भवती महिलाओं को यह थैरेपी दी जाती है। बाकायदा महिलाओं को लाने और ले जाने के लिए वाहन की व्यवस्था है।
पृष्ठ 6 पंजा 7

इससे बच्चों में बेहतर होती है ग्रोथ

मैडिकल कॉलेज हॉस्पिटल की गायनिक डिपार्टमेंट की एचओडी डॉ. मीना अर्मा का कहना है कि गर्भावस्था के दौरान संगीत की थैरेपी लेने से सकारात्मक अंतर पड़ता है। मां का रक्तचाप अच्छा होता है तो इससे गर्भ में पल रहे बच्चे को पर्याप्त पोषक तत्व मिलते हैं। इससे बच्चे की बेहतर ग्रोथ होती है। वहीं संगीत की अच्छी धुन सुनने से गर्भवती मानसिक तनाव से मुक्त होती है।

एक से डेढ़ घंटे तक वर्कशॉप

म्यूजिक थैरेपी का सेशन एक से डेढ़ घंटे तक चलता है। महिलाओं को भारतीय संगीत की अलग-अलग धुने सुनाई जाती है। किलहाल सेशन के दौरान इस थैरेपी प्रोग्राम को बंद रखा गया है। विश्वविद्यालय प्रबंधन के अनुसार गर्भ संस्कार की पुस्तकों में संगीत की धुनों का खास महत्व बताया

गया है। बताया गया है कि गर्भवती महिलाएं जब संगीत सुनाती हैं तो गर्भ में पल रहे बच्चे उसे ऑनबोर्ड कराती हैं। थैरेपी के एक-डेढ़ वर्ष बाद जब बच्चे को संगीत की वही धुन सुनाई जाती है तो इसे सुनकर शांत हो जाती हैं। अगर रो रहे हैं तो रोना बंद कर आराम से ले जाते हैं।

विश्वविद्यालय के प्रिंसिपल रहते हैं मौजूद

संगीत थैरेपी देने के दौरान संगीत विभाग के प्रमुखों के साथ ही मैडिकल एक्सपर्ट भी मौजूद रहते हैं। संगीत की ऐसी धुनों को सुनाया जाता है जो मन, शरीरक में राहत दे। थैरेपी के वर्कशॉप के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग के धीरे-धीरे अधीक्षकियों की मदद ली

जाती है। यही को-ऑर्डिनेट बर मिश्रिनी के माध्यम से गर्भवती महिलाओं को थैरेपी तक लाती है। विधि के जनसंपर्क अधिकारी विरोज डोंगर ने बताया कि थैरेपी लेने 30 से 40 महिलाएं आ रही थीं। सोशल मीडिया की देखरेखी पर किलहाल म्यूजिक थैरेपी का सेशन नहीं हो पाया है।